सम्पूर्णता के लिए तीव्र पुरूषार्थ

(प्रथम सप्ताह) स्वमान - मैं बह्मा बाप समान परोपकारी आत्मा हूँ।

शिवभगवानुवाच -जैसे ब्रह्मा बाप ने अपकारियों पर भी उपकार किया, निन्दा-ग्लानि करने वालों को भी अपना मित्र समझा, ऐसे फालो फादर ....तब कहेंगे बाप समान परोपकारी आत्मा।

योगाभ्यास -यदि समय पर किसी से हमें थोड़ा भी सहयोग मिल जाता है तो उसके लिए हम यही कहते हैं कि आपका उपकार हम जीवन भर नहीं भूलेंगे, लेकिन बाबा ने हमारे लिए क्या-क्या किया....? ....याद करें उसके अनगिनत उपकारों को .....जिसने हमें माया की दलदल से निकाला ...जिसने हमें अज्ञान अंधकार से निकाल सत्य ज्ञान की रोशनी दी..जिसने हमारे जीवन को दिव्यगुणों से श्रृंगारित किया....उसे हम कैसे भूल सकते हैं?

धारणा - अपकार की भावना को परोपकार की भावना में परिवर्तित करना - कोई कैसा भी हो लेकिन कभी भी हमारे अंदर अपकार की भावना इमर्ज न हो। अपने को याद दिलाएं -मैं परोपकारी आत्मा हूँ इसलिए, मुझे विशाल दिल बन, रहमदिल भावना से, क्षमा की भावना से अपकारियों पर भी उपकार करना है। सदा गुणग्राही दृष्टि रख, अपनी श्रेष्ठ और शुभभावना द्वारा हरेक को समय पर सहयोग देना है।

दुआएं दो और दुआएं लो - इसके लिए सर्व के प्रति अपनी भावनाओं को श्रेष्ठ रखो। यदि कोई किसी की निगेटीव बात को सुनाता भी है तो एक कान से सुन दूसरे से निकाल दो। अपनी श्रेष्ठ वृत्ति के वायब्रेशन्स द्वारा वायुमण्डल को ऐसा बनाओ जो कोई भी आपके सामने आए तो वह कुछ न कुछ स्नेह और सहयोग का अनुभव करे, क्षमा का अनुभव करे..हिम्मत का अनुभव करे..उमंग-उत्साह का अनुभव करे..।

चिन्तन -क्या मैं अपकारियों पर भी उपकार की भावना रखता हूँ या बदले की भावना आती है? अपकारियों पर भी सदा उपकार की भावना कैसे रहे? परोपकार वाली आत्माओं की क्या-क्या निशानियाँ होंगी? ब्रह्मा बाबा के किन प्रसंगों को सम्मुख रखें जिससे हमें कठिन परिस्थितियों में परोपकारी बनने में मदद मिले।

साधकों के प्रति -तुम बाप समान परोपकारी आत्मा हो, इसलिए तुम किसी पर भी अपकार नहीं कर सकते। स्वयं से बातें करें -उपकारियों पर उपकार करना, ये तो सभी जानते हैं लेकिन तुम्हारा काम है अपकारियों पर भी उपकार करना। और जो अपकारियों पर भी उपकार करते हैं उन्हें ही कहेंगे सच्चे-सच्चे बाप समान परोपकारी आत्मा।

(द्वितीय सप्ताह) स्वमान - मैं प्रसन्नचित्त आत्मा हूँ।

प्रसन्नचित्त आत्मा अर्थात स्वयं से प्रसन्न, सर्व से प्रसन्न और सेवा से प्रसन्न। अगर इन तीनों में प्रसन्नता है तो बापदादा को स्वत: ही प्रसन्न किया जा सकता है और जिस आत्मा पर बाप प्रसन्न है वह सदा सफलता मूर्त बन जाती है।

योगाभ्यास -1. अपने सर्वश्रेष्ठ भाग्य को देखें... स्वयं भगवान मेरा...उसका सब कुछ मेरा हो गया...उसने अपने सर्व वरदान और सर्वशक्तियां मुझे दे दी..वाह मेरा सर्वश्रेष्ठ भाग्य...इस अंतिम जन्म में हर पल भगवान का साथ है। स्वयं भगवान हमें सर्व सम्बन्धों का प्यार दे रहा है...जिसे सारी दुनिया पुकार रही है उसका सत्य ज्ञान मुझे मिल गया..हम उसकी क्षत्रछाया में आ गये..

2. मैं अकाल तख्त नशीन श्रेष्ठ आत्मा हूँ....जो स्वयं को अकालतख्त नशीन श्रेष्ठ आत्मा समझकर चलते हैं वही बाप के दिलतख्तनशीन बनते हैं....और जो अभी बाप के दिलतख्तनशीन हैं वही भविष्य राज्य के तख्तनशीन बनते हैं।

3. स्वयं को अकालतख्तनशीन श्रेष्ठ आत्मा समझ परमात्म मिलन का सर्वश्रेष्ठ आनंद लो क्योंकि आत्मा समझने से न देह, न देह के सम्बन्ध और न पदार्थ अपना प्रभाव डाल पाएंगे....एक परमात्मा बाप ही संसार है उसी से सर्व सम्बन्धों का सुख लो।

चिन्तन -अल्पकाल की प्रसन्नता और सदाकाल की प्रसन्नता में अंतर ? अप्रसन्नता का कारण ? सदा प्रसन्न रहने की विधि। प्रसन्नचित्त आत्माओं की निशानी ? प्रसन्नता का आधार ?

धारणा -प्रसन्नता -सदा प्रसन्न रहने के लिए अपने इस ब्राह्मण जीवन की विशेषताओं को जान उसे कार्य में लगाओ। विशेषताओं को कार्य में लगाने से एक विशेषता फिर और विशेषताओं को ले आती है।

प्रिय साधकों -अपने जीवन का लक्ष्य बना लें...कि कुछ भी हो जाए..हमें अपनी प्रसन्नता को नहीं छोड़ना है क्योंकि आपकी प्रसन्नता ही संसार की प्रसन्नता है। आपका प्रसन्नमूर्त चेहरा ही परमात्म प्रत्यक्षता का आधार है इसलिए सदा प्रसन्न रहना और सबको प्रसन्न करना है।

भविष्य में ...

-पेज 5 का शेष

दृढ़ संकल्प सारे भारतवासियों को लेना है। डायलॉग में शक्तिशाली लोग भाग लेते हैं। शक्तिशाली का अर्थ है कि जब वह बोलता है तो लोग उसको सुनते हैं। जितने ज्यादा लोग उसे सुनते हैं उतनी उसकी शक्ति ज्यादा होती है। इन शक्तिशाली लोगों को निर्णय करके अपने जीवन में परिवर्तन लाना है। अपने परिवर्तन से अपने स्नेहीजनों में परिवर्तन लाना है।

जिन-जिन शहरों में हमने कार्यक्रम किए हैं वहाँ भाग लेने वालों के जीवन में और उनसे जुड़े लोगों के जीवन में परिवर्तन आ रहा है। अत: हमारा दृढ़ निश्चय है कि इस सॉफ्ट पावर को भारत में लाना है और इसे लाने के लिए अपनी जीवन पद्धति को आध्यात्मिक बनाना है।आज हम गांधी जी, नेल्सन मण्डेला, मदर टेरेसा को इसलिए याद करते हैं कि उन्होंने आध्यात्मिकता का जीवन में समावेश किया तथा नि:स्वार्थ बने। हमें भी ऐसा बनना है और आत्मबल को जीवन में भरना है। यही फ्यूचर ऑफ पावर कार्यक्रम का उद्देश्य है।

फ्यूचर ऑफ पावर के आगामी कार्यक्रम - 19-20 अक्टूबर 2013 -नागपुर (महाराष्ट्र), 26-27 अक्टूबर 2013- मैंगलोर (कर्नाटक), 16-17 नवम्बर 2013- राजकोट (गुजरात), 23-24 नवम्बर 2013- कोचीन (केरल), 07-08 दिसम्बर 2013 - फरीदाबाद (हरियाणा), 14-15 दिसम्बर 2013- पटना (बिहार), 21-22 दिसम्बर 2013- कानपुर (उत्तरप्रदेश), 25-26 जनवरी 2014- विजयवाड़ा (आन्ध्रप्रदेश), 01-02 फरवरी 2014- विजाग (आन्ध्रप्रदेश), 08-09 फरवरी 2014- फिरोजाबाद (उत्तरप्रदेश), 15-16 फरवरी 2014- अजमेर (राजस्थान), 07-08 मार्च 2014- काठमाण्डु (नेपाल), 14-15 मार्च 2014- पोखरा (नेपाल), 22-23 मार्च 2014- अगरतल्ला (त्रिपुरा)।

समस्तीपुर। डी.ए.वी.स्कूल में विद्यार्थियों को सम्बोधित करते हुए ब्र.कु.ओमप्रकाश। मंचासीन हैं ब्र.कु.अरुणा,ब्र.कु.कुंदन, प्राचार्य तथा अन्य।

नेपन्सी रोड-मुम्बई। अमर संस के मालिक शामजी भाई, ब्र.कु. रुकमणि, ब्र.कु.गीता पर्यूषण पर्व प्रवचन माला का उद्घाटन करते हुए।

सादडी। राजस्थान की पूर्व मुख्यमंत्री श्रीमति वसुंधरा राजे सिंधिया को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु.शुचिता।

नागौर (डिडवाना)। जेल में कैदी भाई-बहनों को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु.अनिता एवं ब्र.कु.विमला।

रतलाम। अहिंसा ग्राम में रक्षाबंधन मनाने के पश्चात भाजपा उपाध्यक्ष मनोहर पोरवाल, ब्र.कु.सविता तथा अन्य समूह चित्र में।

ऋषिकेश। श्री श्री डॉ.रामेश्वर दास जी को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु.आरती।

छोटा उदेपुर। कलेक्टर जेनु देवन तथा डिप्युटी कलेक्टर एस.पी. भगोरा को रक्षासूत्र बांधने के पश्चात ब्र.कु.मोनिका, ब्र.कु.सपना।

बहजोई। डीएम एल.बी.पाण्डेय को रक्षासूत्र बांधने के पश्चात ईश्वरीय निमंत्रण देते हुए ब्र.कु.कुसुम।